

# कल्याण सिंह के राजनीतिक जीवन का अध्ययन

Dr. Karamveer Singh\*

Associate Professor, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

**शोध संक्षेप –** यूपी राजनीति की प्रयोगशाला है। यहां नए राजनीतिक प्रयोग किए जाते रहे हैं। कल्याण सिंह इस प्रयोगशाला से बाहर आए। नाम तो सुना ही होगा। वह जून 1991 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद, उन्होंने 8 दिसंबर 1992 को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। इसके लिए नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद, वह 1993 के उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में अतरौली और कासगंज से विधायक चुने गए। सिंह को 8 सितंबर 2014 को राजस्थान के राज्यपाल के रूप में शपथ दिलाई गई। उन्हें हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल का अतिरिक्त प्रभार दिया गया। जनवरी 2015 में उन्हें एक राष्ट्रवादी, हिंदुत्व वादक के रूप में जाना जाता है। इस शोध पत्र में, हम कल्याण सिंह के राजनीतिक जीवन का अध्ययन कर रहे हैं।

**प्रमुख बिंदुः -** कल्याण सिंह का राजनीतिक जीवन, नकल अध्यादेश, बाबरी मस्जिद विध्वंस, यूपी की राजनीति को नाथ दिया, मंडल और कमंडल की राजनीति, फिर से राजनीति में काला दिन, सचिवालय में दो मुख्यमंत्री, हिंदू हृदय सम्राट भाजपा से निष्कासित, कुसुम राय द हिंदू अखबार और निष्कर्ष

X

## जीवन परिचय:

कल्याण सिंह का जन्म 05 जनवरी 1932 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री तेजपाल लोधी और माता का नाम श्रीमती सीता देवी था। कल्याण सिंह एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं। वह वर्तमान में राजस्थान के राज्यपाल हैं। पूर्व में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल थे। इसके पहले वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भी रह चुके हैं। वह दो बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं और उन्हें 26 अगस्त 2014 को राजस्थान के राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्हें एक राष्ट्रवादी, हिंदुत्व वादक के रूप में जाना जाता है।

## उद्देश्य:

1. कल्याण सिंह के राजनीतिक जीवन का अध्ययन किया गया।
2. भारतीय राजनीति कल्याण सिंह की हिंदुत्व भूमिका का अध्ययन किया गया।

## परिकल्पना:

1. कल्याण सिंह ने भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. राजनीति में हिन्दू हृदय सम्राट के रूप में कल्याण सिंह को जाना गया।

## आँकड़ों का संग्रह:

प्रस्तुत शोध पत्र में कल्याण सिंह के राजनीतिक जीवन के अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन हेतु सूचनाएं उत्तरप्रदेश सरकार, राजभवन राजस्थान, हिमाचल राजभवन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय, जनसंपर्क, व्यक्तिगत सम्पर्क, पत्र पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं अंतर्जाल के माध्यम से प्राप्त की गई हैं।



## राजनीतिक जीवन:

1. राजस्थान के राज्यपाल:-  
4 सितम्बर 2014 से वर्तमान में कार्यरत
2. हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल:-  
जनवरी 2015-12 अगस्त 2015
3. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री:-

### कार्यकाल:

24 जून 1991-6 दिसम्बर 1992

### कार्यकाल:

21 सितम्बर 1997-12 नवम्बर 1999

## पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री:

वह जून 1991 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद, उन्होंने 8 दिसंबर 1992 को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। इसके लिए नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद, वह 1993 के उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में अतरौली और कासगंज से विधायक चुने गए। भाजपा चुनावों में एकल सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, लेकिन मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व वाली समाजवादी-बहुजन समाज पार्टी ने एक पार्टी बनाई। गठबंधन सरकार। कल्याण सिंह विधान सभा में विपक्ष के नेता बने। वह 19 सितंबर से 19 नवंबर तक फिर से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने।



21 अक्टूबर 1991 को, बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने कल्याण सिंह सरकार से समर्थन वापस ले लिया। कल्याण सिंह पहले से ही कांग्रेस विधायक नरेश अग्रवाल के संपर्क में थे और उन्होंने नई

पार्टी लोकतांत्रिक कांग्रेस बनाने के लिए जल्दबाजी की और 21 विधायकों के समर्थन का समर्थन किया। इसके लिए उन्होंने नरेश अग्रवाल को ऊर्जा विभाग का प्रभार सौंपा।

कल्याण सिंह ने दिसंबर 1991 में पार्टी छोड़ दी और जनवरी 2007 में फिर से भाजपा में शामिल हो गए। 2008 के आम चुनावों में, उन्होंने बुलंदशहर से भाजपा के उम्मीदवार के रूप में लोकसभा चुनाव लड़ा। 2009 में, उन्होंने फिर से भाजपा छोड़ दी और एटा लोकसभा क्षेत्र से एक स्वतंत्र सांसद के रूप में चुने गए।

## राज्यपाल:

सिंह को 8 सितंबर 2014 को राजस्थान के राज्यपाल के रूप में शपथ दिलाई गई। उन्हें जनवरी 2015 में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल का अतिरिक्त प्रभार दिया गया।

1991 में यूपी में बीजेपी के पहले मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को दो कारणों से उस समय की राजनीति में याद किया जाता है।

## पहला – 'नकल अध्यादेश'

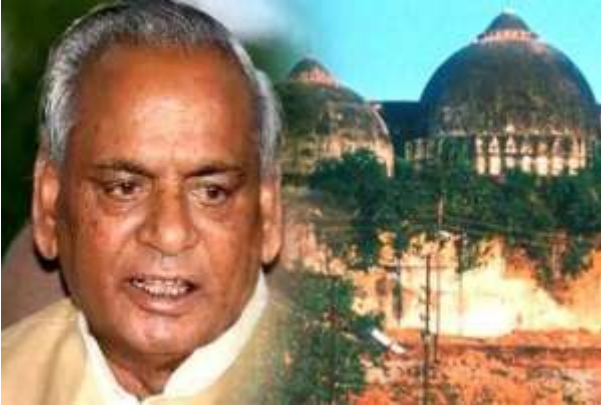
जिसके आधार पर वह सुशासन की बात करता था। कल्याण सिंह मुख्यमंत्री थे और राजनाथ सिंह शिक्षा मंत्री थे। बोर्ड परीक्षा में धोखाधड़ी करने वालों को भेजने के इस कानून ने कल्याण को एक साहसिक प्रशासक बना दिया। यूपी में किताब रख कर धोखा देने वालों के लिए यह युग बन गया।



## दूसरा है बाबरी मस्जिद का विध्वंस:

यह हिंदू समूहों का सपना था। इसके लिए 425 में 221 सीटें लेने वाली कल्याण सिंह सरकार ने अपना बलिदान दिया। हिंदू हृदय सम्राट बनने के लिए। सरकार चली गई लेकिन संघ विचारधारा का कल्याण हुआ। उसी के अनुसार स्थिति भी

बढ़ी। उस समय केंद्र में केवल दो नाम थे - अटल बिहारी और यूपी में कल्याण सिंह।



1997 में जब कल्याण सिंह फिर से मुख्यमंत्री बने, तो उन्हें फिर से दो चीजों के लिए जाना गया।

### कल्याण सिंह ने यूपी को दिया नाथः

अब आपको वर्ष 1962 में ले चलते हैं। अलीगढ़ की अतरौली सीट। 30 वर्षीय लोध समाज का लड़का जनसंघ से चुनाव लड़ता है। हारता है लेकिन हार नहीं मानता। पांच साल बाद फिर से चुनाव होते हैं। इस बार उन्होंने कांग्रेस के उम्मीदवार को 4,000 मतों से हराया। इसके बाद वह 8 बार यहां से विधायक बने।



यह वह दौर था जब चैधरी चरण सिंह ने यूपी में कांग्रेस विरोधी राजनीति की और सफलता भी हासिल की। उसी समय भारत में हरित क्रांति हुई। वेस्ट यूपी में किसानों की स्थिति मजबूत हुई। इनमें से अधिकांश किसान ओबीसी थे। कल्याण सिंह बड़ी आसानी से जनसंघ में पिछड़ी जातियों का चेहरा बन गए। 1977 में जब जनता की सरकार बनी थी, तब पहली बार पिछड़ी जातियों का वोट प्रतिशत लगभग 35 प्रतिशत था।

कल्याण सिंह ने 1967 में पहली बार अतरौली विधान सभा से चुनाव जीता और 1980 तक विधायक बने रहे। 1980 के विधानसभा चुनावों में कल्याण सिंह को कांग्रेस के टिकट पर

पहली बार अनवर सिंह ने हराया था। लेकिन भाजपा के टिकट पर, कल्याण सिंह ने फिर से 1985 का विधानसभा चुनाव जीता। तब से, कल्याण सिंह 2004 के विधानसभा चुनाव तक अतरौली से विधायक थे।

आपातकाल के बाद, अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी छवि सुधारने की कोशिश की। जनसंघ से भाजपा का गठन। लेकिन 1984 के लोकसभा चुनाव में भाजपा बुरी तरह हार गई। केवल दो सीटें मिलीं। अटल खुद हार गए थे। इसके बाद बीजेपी को एक नया मुद्दा मिल गया। यूपी ने दिया अयोध्या मंदिर का मुद्दा इसी समय, शाह बानो प्रकरण हुआ जिसमें मुस्लिम समाज के दबाव में केंद्र की कांग्रेस सरकार ने संविधान में संशोधन किया और सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को पलट दिया। तब इस सरकार ने हिंदुओं को खुश करने के लिए विवादित अयोध्या मंदिर का ताला खोला। अब भाजपा को राम मंदिर का मोहरा मिल गया है। उन्होंने दबाव के साथ भी खेला। मुसलमानों के मुद्दे पर, हिंदुओं को जाति को भूलने और एक बनने के लिए बुलाया गया था।

### कल्याण सिंह मंडल और कमंडल की राजनीति के प्रतीक हैंः

राजनीति में जनता पार्टी, जनसंघ और जनता दल का उदय जारी रहा। कहानी में अगला बड़ा मोड़ 1989-90 में आया जब देश में मंडल और कमंडल की राजनीति शुरू हुई। आधिकारिक रूप से पिछड़ी जातियों की श्रेणियां अस्तित्व में आईं और पिछड़े वर्गों की राजनीतिक शक्ति को मान्यता दी गई।

भाजपा, जिसे बनिया और ब्राहमण पार्टी के रूप में जाना जाता है, ने कल्याण सिंह को पिछड़ों का चेहरा बनाया और सुशासन का वादा किया। कल्याण सिंह इस समय दो पहचान बना रहे थे। वह हिंदू हृदय सम्राट के साथ लोधी राजपूतों के प्रमुख भी बन रहे थे। भाजपा में, महाराष्ट्र के ब्राहमणों के स्थान पर ओबीसी जातियों के फायरब्रांड नेता आने लगे और कल्याण उनके प्रमुख बन गए। मुसलमानों को लड़ने के नाम पर जातियों को भुलाया जाने लगा। लेकिन जातियों का वर्चस्व खत्म नहीं हो रहा था। इन नए लोगों से नाराज होकर, उच्च जाति के लोगों ने पार्टी के भीतर अपना वर्चस्व बनाने के लिए अपने भीतर युद्ध छेड़ दिया था। साथ ही, हर टिकट वितरण पर नाराज होने की भाजपा की परंपरा भी शुरू हो गई थी।

1991 में, बीजेपी 221 सीटों के साथ यूपी विधानसभा में आई, लेकिन 6 दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद को ध्वस्त कर दिया गया और कल्याण सिंह की सरकार को बर्खास्त कर दिया गया। 6 दिसंबर भारत के इतिहास में काला दिन था। 1993 में फिर से

चुनाव हुए। भाजपा के वोट बढ़ गए लेकिन सीटें कम हो गईं। बीजेपी सत्ता से बाहर रही। दो साल बाद, भाजपा बसपा के साथ गठबंधन में फिर से सत्ता में आई, लेकिन भाजपा की मुख्यमंत्री नहीं बनी। लेकिन देश की राजनीति बदल गई। केंद्र की कांग्रेस सरकार का बहुत अपमान हुआ।

अब समय आ गया था अटल बिहारी वाजपेयी का। चारों ओर चहल-पहल थी – 'अबकी बारी अटल बिहारी'। केंद्र के साथ-साथ यूपी में भी माहौल बदल गया।

### कल्याण सिंह को दूसरी बार मौका मिला लेकिन समय बदल गया:

यूपी में तेरहवीं विधानसभा का जन्म 17 अक्टूबर 1996 को हुआ था। लेकिन चुनाव परिणामों के बाद तस्वीर स्पष्ट नहीं थी। भारतीय जनता पार्टी 425 सीटों वाली विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी बन गई, जिसने 173 सीटें हासिल कीं। समाजवादी पार्टी को जहां 108 सीटें मिलीं, वहीं बहुजन समाज पार्टी को 66 और कांग्रेस को 33 सीटें मिलीं। लेकिन तत्कालीन राज्यपाल रोमेश भंडारी भी राजनीति का आनंद लेने आए। उन्होंने राष्ट्रपति शासन को छह महीने तक बढ़ाने के लिए केंद्र को सिफारिश भेजी। इस पर एक कानूनी विवाद भी पैदा हुआ, क्योंकि राज्य में राष्ट्रपति शासन के एक साल पहले ही पूरा हो चुका था। अंततः सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले को बरकरार रखते हुए राष्ट्रपति शासन को छह महीने के लिए बढ़ाने के केंद्र के फैसले को मंजूरी दे दी।

इसके बाद, राजनीतिक समीकरणों की एक श्रृंखला बिगड़ने लगी। भाजपा और बसपा ने एक ऐसा गठबंधन बनाया जिसका भारत के इतिहास में कोई मिसाल नहीं था। दोनों दलों ने छह महीने के लिए राज्य चलाने का फैसला किया। इससे पहले 1995 में भाजपा और बसपा ने सरकार बनाई थी। लेकिन बाद में भाजपा ने समर्थन वापस ले लिया जिसके कारण राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया। इस बार एक नया प्रयोग हुआ। फॉरवर्ड पार्टी और बैकवर्ड पार्टी का गठबंधन। जिसमें मायावती पहले छह महीने के लिए 21 मार्च 1997 को उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं। आगे वाली पार्टी को थोड़ा इंतजार करना पड़ा। सामाजिक-संबंधित भारत में, इस गठबंधन के दसियों समाजशास्त्रीय साधनों को प्राप्त किया जा सकता है। यह अध्ययन के लायक एक गठबंधन था।

### राजनीति में फिर से कल्याण सिंह का काला दिन:

लेकिन मुख्यमंत्री के अलावा, विधानसभा में एक और महत्वपूर्ण पद है। विधानसभा अध्यक्ष इस बारे में दोनों पक्षों के बीच विवाद था। बाद में केसरीनाथ त्रिपाठी भाजपा के अध्यक्ष बने। और यह

एक निर्णय था जो बाद में कई घोटालों का कारण बना। और इसीलिए यह पता चला कि यह पद महत्वपूर्ण क्यों था। 21 सितंबर 1997 को, मायावती ने छह महीने पूरे किए। और भाजपा के केवल कल्याण सिंह ही मुख्यमंत्री बने। कई नेताओं का जोर था कि उन्हें नहीं बनाया जाना चाहिए। लेकिन हिंदू हृदय सम्राट की उपाधि वापस देना भी मुश्किल था। इसके बाद मायावती सरकार के ज्यादातर फैसले बदले गए। दोनों पक्षों के बीच मतभेद सामने आने लगे। एक महीने के भीतर, मायावती ने 19 अक्टूबर 1997 को कल्याण सिंह सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया। राज्यपाल रोमेश भंडारी फिर से इस दृश्य में थे। उन्होंने कल्याण सिंह को दो दिनों के भीतर 21 अक्टूबर को बहुमत साबित करने का आदेश दिया।

इन दो दिनों में यूपी की प्रयोगशाला में कई प्रयोग किए गए। बसपा, कांग्रेस और जनता दल बुरी तरह से बिखर गए और कई विधायक भाजपा में शामिल हो गए। कल्याण सिंह को इसका मास्टर माइंड माना जाता था। अध्यक्ष का निर्णय केवल पार्टियों पर मान्य होता है। वह बीजेपी के ही थे। इसलिए कल्याण को कोई समस्या नहीं थी। त्रिपाठी की काफी आलोचना हुई। लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा।

21 अक्टूबर 1997 का दिन भारत के इतिहास का एक और काला दिन है। और कल्याण सिंह सरकार की एक और। उस दिन, माइक ने विधानसभा के भीतर विधायकों के बीच फेंक दिया और लात मारी, लात, घूसे और चप्पल फेंके।

विपक्ष मौजूद नहीं था। कल्याण सिंह ने बहुमत साबित किया। उन्हें 222 विधायकों का समर्थन मिला, जो भाजपा की मूल ताकत 173 से 49 अधिक थी। विधानसभा में हिंसा के बाद, राज्यपाल रोमेश भंडारी ने राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाने की सिफारिश की। 22 अक्टूबर को केंद्र ने यह सिफारिश की। आर। ने इसे नारायणन को भेजा। लेकिन राष्ट्रपति नारायणन ने केंद्रीय मंत्रिमंडल की सिफारिश को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और इसे पुनर्विचार के लिए केंद्र सरकार को भेज दिया। आखिरकार, केंद्र सरकार ने उत्तर प्रदेश में फिर से राष्ट्रपति शासन की सिफारिश नहीं भेजने का फैसला किया।

### एक सचिवालय में दो मुख्यमंत्रियों की कहानी:

अब सब कुछ कल्याण सिंह के पक्ष में था। सभी को पुरस्कृत भी किया जाना था। कल्याण सिंह ने अपना नाम बदल लिया और अन्य दलों के प्रत्येक विधायक को मंत्री बना दिया। देश के इतिहास में पहली बार 93 मंत्रियों की एक कैबिनेट ने शपथ ली थी। लेकिन कल्याण सिंह ने जो मशीन चलाई थी, अब वह

उनके नियंत्रण से बाहर हो गई। बाकी दलों ने भी इसी तरह के गठबंधन बनाने शुरू कर दिए। ऐसा क्या हुआ कि 21 विधायक लोकतांत्रिक कांग्रेस बनाने के लिए कांग्रेस से अलग हो गए। ये लोग कल्याण के साथ थे।

दूसरी बार सत्ता में आने के बाद, कल्याण सरकार ने जोर देकर कहा कि स्कूलों में सभी प्राथमिक कक्षाएं भारतमाता पूजन से शुरू होती हैं। वंदे मातरम 'को' यस सर 'के जगह बोला जाना चाहिए। फरवरी 1998 में, सरकार ने राम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़े लोगों के मामलों को वापस ले लिया। यह भी घोषणा की गई थी कि अगर सरकार केंद्र में आती है, तो मंदिर वहीं बनाए जाएंगे। 90 दिनों में उत्तराखंड भी बन जाएगा।

21 फरवरी 1998 को, फिर से यूपी में एक काला दिन आया। कल्याण सिंह की राजनीति में यह तीसरी बार था। राज्यपाल रोमेश भंडारी ने कल्याण सिंह को बर्खास्त कर दिया और मुख्यमंत्री जगदम्बिका पाल को 10.30 बजे मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। डेमोक्रेटिक कांग्रेस के जगदम्बिका कल्याण सरकार में परिवहन मंत्री थे। लेकिन अन्य पक्षों से बात करने के बाद, खुफिया विभाग ने अपना काम किया।

### जगदम्बिका पाल:

इस निर्णय के विरोध में, अटल बिहारी वाजपेयी ने आमरण अनशन शुरू कर दिया। लोग रात में हाईकोर्ट चले गए। अगले दिन अदालत ने राज्यपाल के आदेश पर रोक लगा दी और कल्याण सिंह सरकार को बहाल कर दिया। राज्य सचिवालय ने उस दिन अजीब दृश्य देखे। वहां दो मुख्यमंत्री बैठे थे। जगदम्बिका पाल सुबह सचिवालय पहुंचे और मुख्यमंत्री की कुर्सी पर आसीन हुए। हार नहीं मान रहे थे। जब उन्हें लिखित में उच्च न्यायालय का आदेश मिला, तो उन्होंने भारी मन से कल्याण सिंह के लिए कुर्सी छोड़ दी। बाद में, 26 फरवरी को सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर फिर से शक्ति प्रदर्शन किया गया। इसमें कल्याण सिंह जीते। सुप्रीम कोर्ट ने इसे मंजूरी दे दी दो मुख्यमंत्रियों की कहानी खत्म हुई।

इसमें एक और दिलचस्प बात थी। कुछ समय पहले तक, सपा के सर्वेक्षक मौजूद थे और वर्तमान में भाजपा नेता नरेश अग्रवाल उस समय कांग्रेस में थे। जगदम्बिका के साथ आया था। मुख्यमंत्री बनते ही वे तुरंत उपमुख्यमंत्री बन गए। और कल्याण के मुख्यमंत्री बनने के तुरंत बाद, वे भाजपा में शामिल हो गए। कहा कि देखिए, मैं यूपी में ही स्थाई सरकार दे सकता हूं।

### नरेश अग्रवाल:

गवर्नर रोमेश भंडारी ने भी किताब लिखी है। भंडारी के अनुसार, यह नरेश अग्रवाल था जो जगदम्बिका पाल की बुराई के लिए जिम्मेदार था। वह उनके गुरु थे। भंडारी ने लिखा है कि अग्रवाल ने कांग्रेस पार्टी से अपने पिता का टिकट काट दिया। राजा इतने पर ही नहीं रुके। 2002 के विधानसभा चुनाव से ठीक पहले वह सपा में आए। हरदोई से जीता। मंत्री बने। 2007 में जब मायावती की सरकार बनी तो वह बसपा में चली गईं। उप चुनाव में बेटे को विधायक बनाया। 2009 में, उन्होंने खुद फर्रुखाबाद से सलमान खुर्शीद के खिलाफ लोकसभा चुनाव लड़ा। खो गया। तब मायावती ने उन्हें राज्यसभा भेजा। नरेश 2012 में सपा में चले गए। राज्यसभा में पंच भी व्यक्त किए गए हैं।

### फिर हिंदू हृदय सम्राट भाजपा से निकाला गया:

राजनीति में उत्तर प्रदेश की राजनीति में बदलाव आया है। पहली सरकार में जहां कल्याण सिंह माफियाओं के लिए सिरदर्द थे, वहीं दूसरी बार माफिया उनकी सरकार में मंत्री बने। 1993 में, जब कल्याण सिंह राजा भैया के खिलाफ प्रचार करने के लिए कुंडा पहुंचे, तो नारा था – 'गुंडा वाहे करूं, झंडा होजाय दू हाथ'। लेकिन दूसरी बार मुख्यमंत्री बनने के बाद राजा भैया को मंत्रिमंडल में जगह दी गई। क्योंकि मायावती के कल्याण से समर्थन वापस लेने के बाद, यह राजा भैया थे जिन्होंने कल्याण की मदद की।

लेकिन उस समय एक और बात हो रही थी। कल्याण सिंह का उत्तर प्रदेश में एक दोस्त हुआ करता था। कुसुम राय उनके पास बहुत सारी सरकारी ताकत थी। जबकि वह सरकार में कुछ खास नहीं थी। 1997 में लखनऊ के राजाजीपुरम से पार्षद का चुनाव जीतने के बाद आजमगढ़ की कुसुम राय भाजपा के टिकट पर आईं। लेकिन कहा जाता है कि कल्याण सिंह के फैसले के कारण बड़े फैसले बदल दिए गए। पार्टी के कई नेता भी इस मामले से नाराज थे। आपसी लड़ाई हुई। कल्याण सिंह भी किसी की परवाह नहीं कर रहे थे। सभी के खिलाफ विद्रोह खोलें। अटल बिहारी ने वाजपेयी के साथ संबंध बिगाड़ दिए। जब उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटाने का प्रस्ताव रखा गया और केंद्र में मंत्री बनाया गया, तो आडवाणी के साथ रिश्ते खराब हो गए। 1999 में उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया। कल्याण ने तब राष्ट्रीय क्रान्ति दल नाम से अपनी पार्टी बनाई। भाजपा के खिलाफ अपने पूर्ण प्रभाव का इस्तेमाल किया। यह वही तेजाब था जो उसके हाथ पर गिरा था।

### कुसुम राय:

द हिंदू अखबार के अनुसार, कल्याण ने कुसुम राय के संबंध में किसी को नहीं बखशा। लखनऊ में, कुसुम के रातोंरात शक्तिशाली बनने की कहानियाँ। यह मीडिया में जारी रहा कि ट्रांसफर-पोसिं्टग में अच्छी कमाई है। लेकिन कल्याण ने अपनी आँखें बंद रखीं। कुसुम एक सरकारी बंगले में रहती थी। सुरक्षा मुहैया कराई गई थी। कल्याण इतना मानते थे कि अपनी पार्टी बनाने के बाद भी, उन्होंने भाजपा छोड़ने वाले नेताओं का सम्मान नहीं किया।

उस समय, तीन बार के सांसद गंगाचरण राजपूत, जो उनकी जाति के थे, ने उन्हें पार्टी से निकाल दिया। गंगा का कल्याण केवल भाजपा के लिए किया गया था। जबकि भाजपा के लोग नहीं चाहते थे। गंगा ने भी बहुत आग लगाई। बीजेपी में रहते हुए उन्होंने पिछड़ों के लिए आरक्षण की मांग की होगी। लेकिन कल्याण के कारण कोई कुछ नहीं कहता था। बाद में, गंगा ने कुसुम राय के खिलाफ विद्रोह किया। इसलिए कल्याण ने उन्हें पार्टी से निकाल दिया। कल्याण ने संघ परिवार से आए राम कुमार शुक्ला को भी हटा दिया।

यूपी में बीजेपी की लुटिया डूब गई बीजेपी हार गई लेकिन कल्याण को फायदा नहीं हुआ। वह पार्टी में वापस आए। लेकिन तब तक सब कुछ बदल चुका था। 2007 में, भाजपा ने उन्हें फिर से मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनाकर चुनाव लड़ा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। और कल्याण ने वह काम किया जो आश्चर्यजनक था। सपा की सीट से लोकसभा में सांसद बने।

फिर, 2012 के यूपी विधानसभा के चुनावों में, उन्होंने अपनी पार्टी के 200 उम्मीदवारों को हटा दिया। एक भी सीट नहीं मिली। उनके घर अतरौली में भी एक त्रुटि हुई थी। उनकी बहू प्रेमलता अतरौली से हार गई। कल्याण यहां से 8 बार रहते थे। उनका बेटा राजू भैया भी डिबाई से हार गया। चुनाव के दौरान कल्याण हेलीकॉप्टर से घूमते थे। लोगों को एक वोट का महत्व समझाते हुए। लोग शायद समझ गए।



### निष्कर्ष:

उपरोक्त अध्ययन से निष्कर्ष निकाला गया है कि कल्याण सिंह और नरेंद्र मोदी दोनों 2000 के आसपास बहुत तेजी से चढ़ रहे थे। दोनों अटल बिहारी वाजपेयी की नजर में उच्च नहीं थे। आडवाणी कैंप के थे। दोनों हिंदू सम्राट के दिल के लिए उत्सुक थे। दोनों ही पिछड़ी जाति से थे। लेकिन मोदी ने अपनी राजनीति बचा ली। कल्याण को नहीं बचा सके। अपनी जनवरी 2017 की लखनऊ रैली में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कल्याण सिंह को याद किया। नवंबर 2016 में मेरठ की रैली में, अमित शाह ने राज्य के लोगों से वादा किया कि कल्याण सिंह जैसा अच्छा शासन फिर आएगा, अतः हम कह सकते हैं कि कल्याण सिंह जी ने राजनीति में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

### संदर्भ सूची:

1. कल्याण सिंह "संग्रहीत प्रति" दिनांक 19 जून 2015।
2. कल्याण सिंह, अयोध्या और हिंदू पुनरुत्थान ने 29 नवंबर 2012 को संग्रहीत किया
3. "द हिंदू। 3 मई 2007।
4. "कल्याण सिंह को बर्खास्त, जगदम्बिका पाल सीएम"। Rediff-com 21 फरवरी 1998. और 24 सितंबर 2015 को पुनर्प्रकाशित
5. श्रीवास्तव, राजीव (17 दिसंबर 2012)।
6. "14 जनवरी के बाद कल्याण सिंह की भाजपा में घर वापसी -
7. द टाइम्स ऑफ इंडिया "। टाइम्स इंटरनेट (अंग्रेजी में)। टाइम्स ऑफ इंडिया।

8. टीएनएन, 19 जून 2015।
9. “कल्याण सिंह ने राजस्थान के 20 वें राज्यपाल के रूप में शपथ ली”। द इंडियन एक्सप्रेस (अंग्रेजी में)। पीटीआई 4 सितंबर 2014.
10. “कल्याण सिंह को एचपी गवर्नर के रूप में अतिरिक्त प्रभार लेने के लिए” (अंग्रेजी में)। जी नेवस। 26 जनवरी 2015.
11. राजभवन, राज्यपाल कार्यालय, राजस्थान, व्यक्तिगत सम्पर्क, नवम्बर, 2017

---

**Corresponding Author**

**Dr. Karamveer Singh\***

Associate Professor, Department of Political Science,  
Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar,  
Rajasthan